वेबसाइट
www.eklavya.in

**संपादक**
सुशील जोशी

**प्रबंध संपादक**
राजेश उत्साही

**सहायक संपादक**
अफसाना पठान

**उत्पादन सहयोग**
इंदु नायर
राकेश खत्री
जितेंद्र ठाकुर

वार्षिक चंदा 150 रुपए
एक प्रति 15 रुपए

चंदे की रकम कृपया एकलव्य, भोपाल के नाम बने ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें।

**संपादन एवं संचालन**
**एकलव्य**
*ई-10,शंकर नगर,*
*बी.डी.ए. कॉलोनी,*
*शिवाजी नगर,*
*भोपाल (म.प्र.) 462 016*

फोन : 0755 - 255 0976
0755 - 267 1017
ई-मेल:srote@eklavya.in

# स्रोत

## विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

**मई 2008**
**वर्ष-2 अंक-4(पूर्णांक 232)**

| | | |
|---|---|---|
| मोटापे को रोका जा सकेगा | | 2 |
| बाल बता देंगे आपका इतिहास | | 2 |
| शनि पास तो आया था मगर... | डॉ. सुशील जोशी | 4 |
| पौधों की ज़िंदगी में फफूंद | रमेश माहेश्वरी | 7 |
| रंग क्यों बदलता है गिरगिट | | 8 |
| दिमागी बुखार में मुहांसों की दवा असरदार है | | 8 |
| औषधि परीक्षण में पारदर्शिता का सवाल | | 9 |
| और न टले शिक्षा अधिकार का कानून | डॉ. विनोद रायना | 10 |
| छिपकलियों से सीखें चिपकना | डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन | 12 |
| संजीवनी का सच क्या है? | डॉ. ओ.पी. जोशी व डॉ. जयश्री सिक्का | 14 |
| प्रलय के बाद का इंतज़ाम - कयामत के बीज | जयंत एरंडे | 17 |
| क्या किरणित खाद्य पदार्थ सुरक्षित हैं? | डॉ. वाई.पी. गुप्ता | 18 |
| बहिष्कृत पहचानः एक पारधी कथा | डॉ. अमन मदान | 20 |
| पार्किन्सन का इलाज हल्दी से | | 22 |
| गोरेपन का गोरख धंधा | डॉ. अरविंद गुप्ते | 23 |
| तंबाकू कंपनियों ने दिग्गजों को खरीदा था | | 26 |
| पौधों के सेक्स जीवन से खिलवाड़ | डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन | 27 |
| दवाइयों की जांच का गोरखधंधा | | 29 |
| घोंसले तरह-तरह के | नरेंद्र देवांगन | 30 |
| प्रकृति को समझने के दो नज़रिए | सी.पी. राजेंद्रन | 32 |
| विदेशी विद्यार्थियों का बढ़ता बाज़ार | नरेश कुमार | 35 |
| लंबी टांगें भीड़ से अलग करती हैं | | 36 |
| नेत्रहीन भी देखते हैं दिन-रात | | 38 |

**राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, डी.एस.टी. की एक परियोजना**

**स्रोत में छपे लेखों के विचार लेखकों के हैं। एकलव्य या रा.वि.प्रौ.सं.पं. का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह मासिक संस्करण स्वयंसेवी संस्थाओं, सरकारी संस्थाओं व पुस्तकालयों, विज्ञान लेखन से संबद्ध तथा विज्ञान व समाज के रिश्तों में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के विशेष अनुरोध पर स्रोत के साप्ताहिक अंकों को संकलित करके तैयार किया जाता है।**